क्रांतिकारी जनताना सरकार की वरिष्ठ कार्यकर्ता और जनता की सच्ची सेविका कामरेड समिता (नोहरी बाई) के आदर्शों को ऊंचा उठाओ!

प्यारे लोगो!

गंभीर अस्वस्थता के चलते 7 फरवरी 2013 को कामरेड समिता की दुखद मृत्यु हुई। उनकी उम्र लगभग 48 साल थी। क्रांतिकारी आन्दोलन में पिछले 22 सालों से कई दिक्कतों और बाधाओं का दृढ़ता से सामना करते हुए कामरेड समिता ने क्रांति का लाल पताका आखिर तक बुलंद रखा। जब उनकी मृत्यु हुई उस समय वह माड़ डिवीजन की कुतुल एरिया जनताना सरकार के कृषि विभाग कार्यकर्ता के रूप में कार्यरत थीं। कामरेड समिता गड़चिरोली जिला के क्रांतिकारी आन्दोलन की पहली पीढ़ी के कार्यकर्ताओं में से एक थीं। उनकी मृत्यु से पार्टी कतारों, जनता और खासकर माड़ क्षेत्र की जनता में शोक की लहर फैल गईं। कई जगहों पर उनकी स्मृति में सभाएं आयोजित की गईं जिसमें उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि पेश की गई। कामरेड समिता को भाकपा (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी क्रांतिकारी जोहार पेश करती है और उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लेती है।

महाराष्ट्र राज्य के गड़चिरोली जिला, टिप्रागढ़ इलाके के मरकानार गांव में कामरेड समिता एक आदिवासी किसान परिवार में जन्मी थीं। मध्यम किसान जंगलूराम उसेण्डी की दो बेटियों में वह बड़ी थीं। बीमारियों के चलते उनका परिवार मरकानार से पन्नेमर्रा आया था और वहीं कामरेड समिता बड़ी हुईं। घर पर उनका नाम नोहरी बाई था। माता–पिता ने अपनी दोनों बेटियों को बड़े प्यार से पाला–पोसा था। बचपन से वह अपने माता–पिता का खेति व अन्य कामों में हाथ बंटाती थीं। जब वह बड़ी हुईं तो माता–पिता की मर्जी के खिलाफ और अपनी पंसद से विवाह कर लिया। 1986–87 में वह पन्नेमर्रा गांव के मड़ावी परिवार में बहू बनकर गईं।

जिनसे उन्होंने शादी की वह कामरेड पहले से क्रांतिकारी आन्दोलन में सक्रिय रूप से काम कर रहे थे। उनके घर आने के बाद कामरेड समिता भी आंदोलन की गतिविधियों से प्रभावित हुईं। इस बीच इस दम्पत्ति को एक बच्चा पैदा हुआ था जो कुछ ही दिनों के अंदर चल बसा। उसके बाद उन्होंने क्रांति के हितों को सर्वोच्च महत्व देते हुए बच्चे पैदा करने की इच्छा त्याग दी। चूंकि पुलिस दमन के चलते उनके पति का घर में रहकर काम करना असंभव हो गया था, इसलिए वह भूमिगत होकर काम करने लगे थे। कामरेड समिता ने संगठन में काम करने में अपने पति का पूरा सहयोग दिया। बाद में, 1990 में वह कामरेड पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए। उसके बाद पुलिस ने कामरेड समिता पर उनके पति को आत्मसमर्पण करवाने के लिए कई तरह से दबाव डाला और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। इन सबका कामरेड समिता ने दृढ़ता से सामना किया। आखिर में, अपने पति के रास्ते पर चलने का निर्णय लेकर वह भी 1992 में क्रांतिकारी आन्दोलन में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर शामिल हो गईं। तबसे वह 'समिता' के नाम से पार्टी कतारों और जनता के बीच परिचित हो गईं। शुरू में एक साल तक उन्होंने भण्डारा (अब गोंदिया) जिले के देवरी इलाके में दस्ता सदस्य के रूप में काम किया था। 1993 में वह फिर टिप्रागढ़ इलाके में आ गईं।

एक साधारण गृहिणी से सीधा गुरिल्ला दस्ते में शामिल होने वाली कामरेड समिता को गुरिल्ला नियमों का कड़ाई से पालन करने में, सभी तरह की परम्पराओं को तोड़ते हुए काम करने में कोई खास परेशानी नहीं हुई। बहुत कम समय में उन्होंने अपने आपको गुरिल्ला जिन्दगी के अनुरूप ढाल लिया। अपने स्नेहिल और मिलनसार स्वभाव की वजह से वह जनता और साथियों के बीच लोकप्रिय हो गईं। खासकर 1992–93 में दुश्मन ने टिप्रागढ़ इलाके में व्यापक दमन अभियान चलाया था। गांव–गांव में पुलिस बलों के गश्त अभियान पूरे जोर से चलते रहे। लेकिन कामरेड समिता ने अपने दस्ते के अन्य साथियों के साथ भारी दमन के बीच भी जनता में घुलमिलकर काम किया। इस दौरान उन्हें कई मुठभेड़ों का सामना करना पड़ा। एक समर्पित जन सैनिक के तौर पर उन्होंने पूरी निडरता से दुश्मन का मुकाबला किया। शत्रु बलों के अत्याधुनिक हथियारों का सामना उन्होंने अपनी देशी 12 बोर बंदूक से ही बखूबी किया। 1995 में जामिड़ी के पास हुई गोलीबारी में उन्हें चोटें आईं। फिर 1998 में जारावण्डी क्षेत्र में पैडी के पास हुई मुठभेड़ में उन्हें कई गोलियां लगीं। उनकी दाईं बांह और जांघ की हड्डियां टूट गई थीं। सिर और पेट में भी गोलियां लगीं। बेहद गंभीर रूप से घायल होने पर भी कामरेड समिता अपनी बंदूक को लेकर ही अपने साथियों के साथ रिट्रीट कर आईं। बाद में उनका इलाज किया गया था लेकिन आखिर तक उनके हाथ और पैर कमजोर ही रहे और बोझा उठाने में व लम्बी दूरी चलने में भी उन्हें तकलीफ होती थी। उनके पेट पर कई घावों के निशान थे। उनके सिर में एक गोली सदा के लिए रह गई। उसके बावजूद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

1999 में पार्टी ने उन्हें दण्डकारण्य प्रेस यूनिट में सदस्य के रूप में स्थानांतरित किया। तबसे 2003 तक कामरेड समिता ने प्रेस यूनिट में विभिन्न रूपों में योगदान दिया। अपनी शारीरिक दिक्कतों की परवाह किए बगैर छपाई, बाइंडिंग आदि कामों

को सीख लिया। 'प्रभात', 'संघर्षरत महिला', 'विय्युक्का' आदि पत्रिकाओं के प्रकाशन में उनका योगदान रहा। कामरेड समिता एक स्नेहिल और मेहनती कामरेड थीं। छोटे–बड़े सभी के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध हुआ करते थे। किसी भी स्तर पर गलतियां दिखने पर कामरेड समिता बैठकों में बेबाकी से आलोचना करती थीं। पार्टी में आने के बाद ही उन्होंने पढ़ना–लिखना सीख लिया। पार्टी के पत्र–पत्रिकाओं को पढ़कर समझ लेती थीं और अपने साथियों से भी सीखा करती थीं। 2001 में आयोजित तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) की पार्टी कांग्रेस के संचालन में कामरेड समिता ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस कैम्प में उन्हें रसोई की जिम्मेदारी दी गई थी। विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों के अलावा नेपाल और तुर्की से आए पर्यवेक्षकों और अन्य कामरेडों के लिए खाने–पीने की व्यवस्था करने में कामरेड समिता की भूमिका को कभी भुलाया नहीं जा सकता। सभी ने उनसे मां जैसे प्यार का अनुभव किया।

2001 के बाद पूरे दण्डकारण्य में जनताना सरकार के नाम से जनता की राजसत्ता के अंगों का निर्माण व्यापक और तेज हुआ। जनता की नई अर्थव्यवस्था की नींव डालते हुए क्रांतिकारी भूमिसुधारों और कृषि विकास कार्यों पर जोर दिया गया। इस मौके पर पार्टी ने कई रणनीतिक इलाकों में कृषि विकास के लिए विशेष रूप से कार्यकर्ताओं को तैनात करने का निर्णय लिया। ये कार्यकर्ता जनता के बीच रहते हुए उनकी खेति–किसानी को विकसित करने के लिए पूरा जोर लगाकर काम करने लगे। इसी सिलसिले में कामरेड समिता को भी माड़ डिवीजन के कुतुल एरिया में एक पंचायत में क्रांतिकारी जनताना सरकार के अधीन कृषि कार्यकर्ता के तौर पर नियुक्त किया गया। कामरेड समिता ने इस निर्णय को सहर्ष स्वीकार किया और लगभग दस साल वह इसका निर्वाह करती रहीं।

अपने मिलनसार स्वभाव के अनुसार कामरेड समिता जनता से आसानी से घुलमिल जाती थीं। गांवों में बच्चे–बूढ़े, महिला–पुरुष सभी कामरेड समिता से प्यार करते थे। वह जिस गांव में भी जाती थीं वहां घर–घर में जाकर लोगों के दुख–तकलीफों के बारे में जानकारी लेती थीं। वह अगर कुछ दिन के लिए भी पार्टी के काम पर कहीं बाहर जातीं तो लोग चिंतित हो जाते थे। इधर–उधर पता करते थे कि 'दीदी कहां गईं'। गांवों में मुख्य रूप से सब्जी–भाजी उगाने में और सिंचाई व्यवस्था बनाने में उन्होंने जनता का मार्गदर्शन किया। साथ ही, साफ–सफाई और खासकर महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता बढ़ाने का अथक प्रयास किया।

पिछले दो–तीन सालों में दुश्मन ने हत्यारे गिरोहों का गठन कर माड़ क्षेत्र में जनता के बीच इस तरह काम करने वाले कृषि विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य तकनीकी विभागों के साथियों को कत्ल करने की एक घिनौनी साजिश रचाई। इस फासीवादी नीति के तहत कृषि कार्यकर्ता कामरेड कुमली और प्रेस यूनिट की सदस्या कामरेड चैते की हत्या कर दी गई। निहत्थे रहकर जनता के बीच काम करने वाले कार्यकर्ताओं, खासकर महिला कार्यकर्ताओं में असुरक्षा का वातावरण निर्मित करने की नीयत से दुश्मन ने यह हथकण्डा अपनाया। लेकिन कामरेड समिता ने इस चुनौती को स्वीकार किया और जनता के सक्रिय समर्थन से उन्होंने अपना काम निर्भीकता के साथ जारी रखा।

कामरेड समिता का वैवाहिक जीवन भी आदर्शपूर्ण रहा। वे दोनों न सिर्फ एक दूसरे का ख्याल रखते थे, बल्कि जनता की सेवा में दोनों ही हमेशा तत्पर रहते थे। वे दोनों सही मायने में सहयोगी थे। दोनों ने ही हमेशा क्रांति के हितों को सर्वोपरि माना और इस बात को अपने व्यवहार में भी साबित किया। इन दोनों की जोड़ी जनता की चहेती थी।

पिछले एक–दो साल से कामरेड समिता की आंखों की रोशनी चली गई थी। वह ठीक से देख नहीं पा रही थीं। इलाज के लिए प्रयास करने के बावजूद दुश्मन द्वारा जारी दमन के चलते संभव नहीं हो पाया। इस बीच कामरेड समिता कैंसर की शिकार हुई थीं। लेकिन जब तक यह पता चल पाता तब तक वह चरम पर पहुंच चुका था। उनके शरीर के कई अंग कैंसर से ग्रस्त हो चुके थे। कामरेड समिता को भी मालूम हुआ था कि वह जानलेवा बीमारी से पीड़ित हो चुकी है। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। पार्टी ने उनके इलाज का बंदोबस्त किया था। लेकिन इलाज के दौरान ही उन्होंने अंतिम सांस ली। इस तरह कामरेड समिता भारत की नई जनवादी क्रांति की बलिवेदी पर एक और शहीद के रूप में अंकित हुईं।

कामरेड समिता की मृत्यु की खबर ने पार्टी, पीएलजीए, जन संगठनों और क्रांतिकारी जनताना सरकार के कतारों और माड़ डिवीजन के कुतुल क्षेत्र की जनता को गम में डुबो दिया। जिन गांवों से कामरेड समिता का प्रत्यक्ष सम्पर्क रहा वहां की जनता फफक–फफककर रो पड़ी। लोगों को अपने परिवार सदस्य को खोने जैसा महसूस हुआ। कई दिनों तक घरों में चूल्हे नहीं जले। कामरेड समिता की असमय मृत्यु किसी के भी गले नहीं उतरी। बहते आंसुओं को पोंछकर सभी ने उनके अधूरे मकसद को पूरा करने का संकल्प लिया।

साथियो, कामरेड समिता एक निस्वार्थ कार्यकर्ता व सच्ची कम्युनिस्ट थीं। 'जनता की सेवा करो' – माओ के इस प्रख्यात कथन को उन्होंने तहेदिल से आत्मसात कर लिया था। जिंदगी में और आंदोलन में चाहे कितनी भी मुश्किलें आएं, वह कभी विचलित नहीं हुईं। वह जनता से जितना प्यार करती थीं, उतनी ही तीखी नफरत वर्ग दुश्मनों से करती थीं। इसीलिए उन्होंने सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद का खात्मा कर शोषणविहीन नव भारत का निर्माण करने हेतु जारी जन संग्राम में भाग लिया। इस महान लक्ष्य के लिए उन्होंने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। आइए, कामरेड समिता के दिखाए रास्ते पर चलें। देश के हर कोने में जनयुद्ध को तेज कर क्रांतिकारी जनताना सरकार को मजबूत करें।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

6 मई 2013